KEEP THE TORCH OF DHAMMA A LIGHT
100 Years
S.N.GOENKA
1924 - 2024
LET IT SHINE BRIGHTLY IN YOUR DAILY LIFE.

विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष 2566, फाल्गुन पूर्णिमा, 07 मार्च, 2023, वर्ष 52, अंक 9

वार्षिक शुल्क रु. 100/- मात्र (भारत के बाहर भेजने के लिए US $ 50)

अनेक भाषाओं में पत्रिका नेट पर देखने की लिंक : http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो, धम्मे होन्तु सगारवा।
सब्बेपि सत्ता कालेन, सम्मा देवो पवस्सतु॥

– धम्मसङ्गणी अट्ठकथा (अट्ठसालिनी)-निगमनकथा.

– चिरस्थाई हो सद्धर्म! गौरवान्वित हो सद्धर्म! सभी प्राणियों के लिए, सम्यक देव समय पर वर्षा करें!

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्काजी का जन्म-शताब्दी वर्ष समारोह प्रारंभ

विगत 29 जनवरी, 2023 को पूज्य गुरुजी का जन्म-शताब्दी वर्ष समारोह “विश्व विपश्यना पगोडा” में सामूहिक साधना के साथ प्रारंभ हुआ एवं इस निमित्त पूरे साल भर तक चलने वाले कार्यक्रमों की एक रूपरेखा भी प्रस्तुत की गयी। इसी प्रकार अन्य साधक भी पूज्य गुरुजी के साथ व्यतीत अपने प्रत्यक्ष अनुभवों एवं प्रेरणाजनक प्रसंगों को साझा करें ताकि उन्हें प्रकाशित किया जा सके। आगामी मेगा कोर्सेस में अधिक से अधिक संख्या में लोग शामिल होकर इस पुण्यकार्य में सहभागी बनें एवं इनका भरपूर लाभ उठाएं। (संपर्क ईमेल: guruji.centenary@globalpagoda.org)

समारोह प्रारंभ करने के लिए हमने अपने देश के सम्माननीय प्रधानमंत्री जी को आमंत्रित किया था। शासकीय व्यस्तता के कारण वे स्वयं तो नहीं आ सके परंतु एक उत्साहवर्धक एवं अत्यंत प्रेरणाजनक पत्र में उन्होंने अपने उद्गार भेजकर शुभ कामनाएं प्रकट की हैं।

ऐसे ही सयाजी ऊ बा खिन के जन्म-शताब्दी समारोह के अवसर पर पूज्य गुरुजी द्वारा लिखा हुआ वह प्रेरणाजनक लेख, उनकी स्वयं की जन्म-शताब्दी वर्ष पर पुनः प्रकाशित कर रहे हैं। — संपादक.

*****

आओ, जन्म-शताब्दी महोत्सव मनाएं!

जीवन ने पचहत्तर बसंत देख लिये।

कोई आया और कहने लगा, आप के इस जन्मदिवस पर अमृत महोत्सव मनायेंगे।

अमृत महोत्सव?

यानी, जो अब तक मृत नहीं हुआ है, उसका महोत्सव। पर जो पचहत्तर बसंत देख कर मृत नहीं हुआ, वह कुछ और बसंत देख लेने के बाद मृत तो होगा ही। ऐसे किसी मर्त्यधर्मा व्यक्ति का अमृत महोत्सव कैसा?

अमृत महोत्सव उन परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन का मनाएं, जिनका भौतिक-शरीर तो मृत हो गया, जिनकी रूप-काया तो मृत हो गयी, पर हम अपनी अथाह श्रद्धा के बल पर उनके यश-शरीर को, उनकी कीर्ति-काया को मृत नहीं होने देंगे। चिरकाल तक अमृत रखेंगे। यही सार्थक अमृत महोत्सव होगा।

उनकी इस प्रथम जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर कृतज्ञता विभोर होकर हम सब संकल्पवद्ध हों कि उस युग पुरुष बोधिसत्त्व की कीर्तिकाया को चिरस्थायी बनायेंगे। केवल आज की ही नहीं, बल्कि सदियों तक की भावी पीढ़ियों के विपश्यी परिवार उनके उपकार को नहीं भुलायेंगे। जब तक धरती पर शाक्यमुनि भगवान गौतम बुद्ध की पावन स्मृति जीवित रहेगी, तब तक इस बुद्ध-पुत्र के असीम उपकार की यशस्वी याद भी बनी रहेगी।

उपकार तो ब्रह्मदेश म्यंमा का भी नहीं भूलेंगे, जिसने सन्तों की गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा मूल बुद्धवाणी को ही नहीं, बल्कि तथागत द्वारा मानवजाति को दी गयी उनकी सबसे महान भेंट कल्याणी विपश्यना को भी शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा।

असीम उपकार उन श्रद्धेय भिक्षु प्रवर लैडी सयाडो का भी, जिन्होंने सदियों से भिक्षुओं द्वारा सुरक्षित रखी गयी विपश्यना विद्या को गृहस्थों के लिए न केवल सुलभ बना दिया बल्कि एक गृहस्थ आचार्य को प्रशिक्षित भी कर दिया।

असीम उपकार उन प्रथम गृहस्थ आचार्य सयातैजी का भी, जिन्होंने इस विशिष्ट उत्तरदायित्व को अत्यंत विलक्षणरूप से निभाया, जिससे कि लोग इस तथ्य के प्रति आश्वस्त हुए कि एक गृहस्थ भी मैत्रीसंपन्न कुशल विपश्यनाचार्य की सफल भूमिका अदा कर सकता है।

और फिर उनके प्रमुख शिष्य सयाजी ऊ बा खिन के उपकार का तो कहना ही क्या! जिनके अदम्य उत्साह और अपूर्व धर्मसंवेग के फलस्वरूप यह मुक्तिदायिनी विद्या हम सब को मिली। सदियों पूर्व से विलुप्त हुई जिस विपश्यना विद्या को शाक्यमुनि सिद्धार्थ गौतम ने केवल अपने ही नहीं, बल्कि अनेकों के कल्याण के लिए खोज निकाला था, वह विद्या कुछ ही सदियों बाद अपनी जन्मभूमि भारत में ही नहीं, बल्कि स्वर्णभूमि म्यंमा को छोड़कर सर्वत्र पुन: लुप्त हो गयी। कितना अटूट विश्वास था सयाजी के मन में इस पुरातन मान्यता का कि यह विद्या अब फिर जागेगी और अपने देश वापस लौटेगी। वे बार-बार कहते थे कि कल्याणी विपश्यना के पुनर्जागरण का डंका बज चुका है और अब अपनी जन्मभूमि भारत में इसका शीघ्र ही पुनरागमन होगा। भारत में इस समय अनेक पुण्यपारमी संपन्न लोग जनमे हैं जो इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और तदनंतर यह सकल विश्व में छाये अविद्या के अंधकार को चीरती हुई प्रभासमान होगी तथा अमित लोक कल्याण करेगी।

वे कहा करते थे कि सदियों पूर्व म्यंमा इस विद्या को प्राप्त कर भारत का ऋणी हुआ था। उसे अब यह ऋण चुकाना है, भारत को विपश्यना विद्या

पुन: लौटानी है। वे यहां पधार कर यह पुनीत कार्य स्वयं करना चाहते थे, परंतु कर नहीं पाए। यहां आ नहीं पाए। भले सशरीर नहीं आ पाए, परंतु अपने धर्मपुत्र के साथ दिव्य शरीर में यहां अवश्य आए और अपना धर्म-संकल्प पूरा करवाने में सहायक हुए।

विपश्यी साधक साधिकाओं के मन में यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि उन्हें यह अनमोल विद्या किसी गोयन्का से मिली है। गोयन्का तो केवल माध्यम मात्र है। वस्तुत: उन्हें विपश्यना तो सयाजी ऊ बा खिन से मिली है। भारत आकर जुलाई 1969 में जब पहला शिविर लगाया, तब से लेकर अब तक प्रत्येक शिविर लगाते हुए वह इसी तथ्य की घोषणा करता रहा है और भविष्य में भी करता ही रहेगा। आनापान देते हुए शिविर में सदैव उसकी यह धर्मवाणी गूंजती है :

“गुरुवर ! तेरी ओर से, देऊं धरम का दान।...”

और इसी प्रकार विपश्यना देते हुए भी-

“गुरुवर ! तेरा प्रतिनिधि, देऊं धरम का दान।...”

और मैत्री के पश्चात शिविर समापन करके अपने निवास कक्ष में लौट कर भी-

गुरुवर! तेरो पुण्य है, तेरो ही परताप।
लोगां नै बांट्यो धरम, दूर करण भवताप॥

अन्य सहायक भी यही टेप चला कर शिविर लगाते हैं और भविष्य में इस पीढ़ी के ही नहीं, भावी पीढ़ियों के भी सभी आचार्य यही टेप चला कर शिविर लगायेंगे। अत: स्पष्ट है कि शुद्ध विपश्यना के पुन: भारत लौटने और भारत से सारे विश्व में फैलने का वास्तविक श्रेय परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन को ही है। उनके उपकार को कोई भी विपश्यी साधक कैसे विस्मृत कर सकता है भला !

यह एक ज्वलंत ऐतिहासिक तथ्य है कि यदि म्यंमा (बर्मा) नहीं होता तो विपश्यना कायम नहीं रहती। यदि विपश्यना कायम नहीं रहती तो लैडी सयाडो नहीं होते। यदि लैडी सयाडो नहीं होते तो सयातैजी नहीं होते। यदि सयातैजी नहीं होते तो सयाजी ऊ बा खिन नहीं होते और यदि सयाजी ऊ बा खिन नहीं होते तो गोयन्का कहां से होता? गोयन्का तो सयाजी का ही मानस पुत्र है। सयाजी ऊ बा खिन के करुण मानस में भारत का पुरातन ऋण चुकाने का प्रबल धर्मसंवेग न जागता और भारत तथा विश्व भर में विपश्यना के फैलाव की धर्माकांक्षा न जागती तो जो कुछ हुआ है, वह कैसे संभव होता? द्वितीय धर्मशासन के जागरण और प्रसारण में इस महान गृही संत का बहुत बड़ा हाथ रहा है। हम उसके ऋण से कैसे उऋण हो सकते हैं। सचमुच,

रोम रोम कृतज्ञ हुआ, ऋण न चुकाया जाय।

ऋणमुक्त होने का सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण उपाय तो यही है कि

जीयें जीवन धर्म का !

- गुरुदेव की जन्म शताब्दी के पावन अवसर पर सभी विपश्यी साधक यह दृढ़ निश्चय करें कि हम यथाशक्ति धर्म का जीवन जीयेंगे। हम सब सयाजी ऊ बा खिन के शिष्य, उनका गौरव अक्षुण्ण रखेंगे। धर्मपथ पर दृढ़तापूर्वक चलते हुए हम अपना तो कल्याण साधेंगे ही, औरों के कल्याण के भी कारण बन जायेंगे। हमारी धर्ममयी जीवनचर्या को देख कर जिनमें विपश्यना के प्रति श्रद्धा नहीं है, उनमें श्रद्धा जागेगी, जिनमें श्रद्धा है, उनकी श्रद्धा बढ़ेगी। इस प्रकार विपश्यना के प्रसार द्वारा अनगिनत लोगों के कल्याण का पथ प्रशस्त होगा।

पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की असीम मंगल मैत्री के बल पर ही पिछले तीस वर्षों में यहां विपश्यना के पांव दृढ़तापूर्वक जमें हैं। भारत के हर वर्ग के, हर संप्रदाय के लोगों ने इसे सहर्ष अपनाया है। विश्व भर के छहों महाद्वीपों के छोटे-बड़े शताधिक देशों के लोगों ने इसे बिना झिझक स्वीकार किया है और लाभान्वित हुए हैं।

इतने कम समय में जो कुछ हुआ है उसका अवमूल्यन नहीं करना चाहते, परंतु जो कुछ बाकी है वह तो निस्संदेह बहुत अधिक है। जो कुछ संपन्न हुआ, उसे आधार मान कर विश्वव्यापी विपश्यना के बहुमुखी विकास के लिए हम सभी सन्नद्ध हों। इस अवसर पर हम निम्नांकित योजनाओं को पूरा करने में दृढ़तापूर्वक जुट जायँ, जिससे सयाजी ऊ बा खिन की धर्मकामना पूरी करती हुई कल्याणी विपश्यना विद्या आगामी सहस्राब्दी में प्रभूत प्रभावशाली ढंग से प्रवेश करे।

- अब तक भारत तथा विश्व भर में विपश्यना के जितने केंद्र स्थापित हो चुके हैं और जिनमें प्रशिक्षण चल रहा है उनका विकास हो और जो निर्माणाधीन हैं उनका निर्माण शीघ्र से शीघ्र पूरा करें ताकि अधिक से अधिक लोग उनसे लाभान्वित होते रहें।

- विश्व के अधिक से अधिक लोगों को विपश्यना विद्या का लाभ मिले, इसलिए केवल स्थायी विपश्यना केंद्रों में ही नहीं, बल्कि अनेक देशों में अकेंद्रीय स्थानों पर भी अस्थायी शिविर लगते रहते हैं। ऐसे अकेंद्रीय शिविर अधिक से अधिक स्थानों पर लगें, ताकि अधिकाधिक लोग विपश्यना से लाभान्वित हो सकें।

- भारत, नेपाल, ताईवान, इंग्लैंड और अमेरिका के कारागृहों में लगे विपश्यना शिविरों ने बंदी अपराधियों में सुधार की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह शिक्षणक्रम इन देशों में तो आगे बढ़े ही, अन्यान्य देशों में भी शीघ्र आरंभ किया जाय।

- भारत और नेपाल में नेत्रविहीन लोगों के लिए अत्यंत फलदायी विपश्यना शिविर लगे हैं। इनका इन्हीं देशों में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी फैलाव हो।

- भारत में कुष्ठ रोगियों के लिए विपश्यना के शिविर लग रहे हैं, जिनसे उनकी मानसिकता में बहुत सुधार हुआ है। उनकी हीनभावना की ग्रंथियां टूटी हैं। विपश्यना के कारण जीवन में मुस्कान आयी है। इस क्षेत्र का सफल प्रयोग आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

- जुए, तंबाकू और मादक पदार्थों के अनेक व्यसनी विपश्यना के अभ्यास द्वारा व्यसन मुक्त हुए हैं। ड्रग के व्यसन में बुरी तरह जकड़े हुए लोगों का भी व्यसन-विमोचन हुआ है। आस्ट्रेलिया और स्विटजरलैंड में सरकारी सहयोग के साथ इस दिशा में विपश्यना द्वारा बहुत काम हुआ है और हो रहा है। इस लोकोपकारी कार्य को सर्वत्र बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- भारत तथा अन्य अनेक देशों में प्राइमरी से लेकर हाईस्कूल तक के हजारों छात्र-छात्राएं आनापान से और कॉलेज के विद्यार्थी विपश्यना से लाभान्वित हो रहे हैं। यह कार्यक्रम बहुगुणित रूप में आगे बढ़ना चाहिए ताकि मानव जाति की भावी पीढ़ी सुख-शांति, स्नेह-सौहार्द तथा सद्भावना का जीवन जी सके।

- भारत में, विशेषकर मुंबई शहर में सड़कों पर जीवन बिताने वाले गरीब आवारा बच्चों पर भी आनापान के प्रशिक्षण का सफल प्रयोग किया जा रहा है। इसे भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

- पटिपत्ति विपश्यना सद्धर्म का प्रयोगात्मक पक्ष है। इसका परियत्ति, यानी, सैद्धान्तिक पक्ष उजागर करने के लिए जिस विपश्यना विशोधन विन्यास की स्थापना की गयी और उसने अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सफलता प्राप्त की है। मूल पालि तिपिटक, समस्त अट्ठकथाएं, टीकाएं और अनुटीकाएं तथा अन्य अनेक ग्रंथों सहित बृहद पालि वाङ्मय एक छोटी-सी सघन तश्तरी में निवेशित कर दिया गया है। अन्य दुर्लभ पालि ग्रंथ भी जहां कहीं उपलब्ध हों, उन्हें इसमें जोड़ दिया जाना चाहिए। इन ग्रंथों का पुस्तकाकार प्रकाशन भी संतोषजनक गति से आगे बढ़ रहा है।

- इसी प्रकार संस्कृत भाषा के संपूर्ण धार्मिक वाङ्मय को भी निवेशित

करने का सराहनीय काम आरंभ कर दिया गया है। उसे शीघ्र पूरा किया जाना आवश्यक है। इससे शोधकार्य गंभीरतापूर्वक संपन्न हो सकेगा और इससे यह जाना जा सकेगा कि वे कौन-से कारण थे, जिनकी वजह से कल्याणी विपश्यना और तत्संबंधी सारे साहित्य इस देश से विलुप्त हुए। ऐसे खतरों के प्रति सजग रहते हुए भारत में पुन: आयी हुई विपश्यना और उसके साहित्य को चिरकाल तक सुरक्षित रखना है। इसी से गुरुदेव की यह मंगल कामना पूर्ण होगी- “*चिरं तिट्ठतु सद्धम्मो*”। यह कार्य किसी भी अन्य संप्रदाय के प्रति द्वेषभाव जगा कर कदापि न किया जाय। केवल यथाभूत सत्य का अन्वेषण हो। क्योंकि गुरुदेव सदा ‘**सत्यमेव जयते**’ की धर्मनीति के ही पक्षधर थे। उनकी कुर्सी के पीछे यही बोल बरमी भाषा में लिखे रहते थे।

- एक और अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह जो गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन के ऐतिहासिक स्मारक स्वरूप मुंबई में विशाल ‘विपश्यना स्तूप’ के निर्माण का कार्य आरंभ हुआ है, उसे शीघ्र पूरा करना है। इस स्तूप का प्रयोग केवल विपश्यना साधना के लिए ही होगा। इससे गुरुदेव के धर्म-स्वप्न को पूरा करने में सहायता प्राप्त होगी। इसके विशाल धर्मकक्ष में हजारों की संख्या में विपश्यी साधक साधिकाएं, सामूहिक साधना का अथवा एक दिवसीय शिविर का लाभ उठाते रहेंगे। यह सहज अनुमान किया जा सकता है कि जहां 50-100 साधकों की सामूहिक साधना से साधकों को इतना लाभ मिलता है, वहां उसकी तुलना में हजारों की संख्या वाली सामूहिक साधना कितनी प्रभावी और लाभदायी होगी। *"समग्गानं तपो सुखो"* यह भगवद्वाणी यहां प्रत्यक्ष प्रकट होगी। सामूहिक तप सुखदायी सिद्ध होगा।

- इस स्तूप को लेकर अनजान लोगों में भ्रांतियां जागनी स्वाभाविक है। उन्हें लगेगा कि यह किसी संप्रदाय विशेष का प्रतीक है। परंतु जब वे देखेंगे कि इस स्तूप में विपश्यना साधना के अतिरिक्त कोई सांप्रदायिक कर्मकांड नहीं किया जा रहा, यहां धूप-दीप, नैवेद्य तथा घंटे-घड़ियाल अथवा मूर्ति-पूजन का नामोनिशान नहीं है तो उनकी यह भ्रांति स्वत: दूर होगी।

यह सच है कि बाहर की ओर इसे एक स्तूपनुमा आकृति दिए बिना भी दस हजार व्यक्तियों की सामूहिक साधना के लिए ऐसे एक स्तंभशून्य विशाल हॉल का निर्माण किया जा सकता है। फिर यह सांप्रदायिकता की भ्रांति पैदा करने वाली स्तूप की आकृति क्यों? लोगों की यह भ्रांति भी देर तक नहीं टिक पायगी, जब वे इस सच्चाई से अवगत होंगे कि यह आकृति चिरकाल तक बर्मा के उपकार की याद बनाए रखने के लिए है। यह स्तूप उस धर्म देश के प्रति हमारी असीम कृतज्ञता का प्रतीक होगा। जब विपश्यना विद्या भारत से पड़ोसी देशों में गयी तो वहां के लोगों ने अपने यहां जो प्रारंभिक स्तूप बनाए वे तत्कालीन भारत के स्तूपों की प्रतिकृति मात्र थे। वे इसीलिए बने कि जब-जब वहां के लोग उन स्तूपों को देखेंगे, तब-तब भारत के उपकार को याद कर नतमस्तक होंगे। ठीक इसी प्रकार यहां के लोग श्वेडगोन की आकृति वाले इस स्तूप को देखेंगे तो वे भी सदियों तक बर्मा के उपकार को याद करेंगे, कि उस देश ने एक अनमोल धरोहर की भांति यह विद्या चिरकाल तक संभाल कर रखी और यह भी कि उस देश में सयाजी ऊ बा खिन जैसे संत गृहस्थ जनमे, जिनके अदम्य उत्साह के कारण यह पुरातन निधि भारत को पुन: प्राप्त हुई और यहां से विश्व के कोने-कोने में फैली, जिससे कि भारत विश्वगुरु के पुरातन विरुद को पुन: उपलब्ध कर सकने योग्य बना। इस माने में यह स्तूप हमारी कृतज्ञता का प्रतीक होगा, न कि किसी सांप्रदायिकता का। यह स्तूप वस्तुत: भारत में विपश्यना के पुनर्स्थापन का भव्य स्मारक होगा। सयाजी की महानता का कीर्तिस्तंभ होगा।

- और स्तूप के बाहर जो विशिष्ट दीर्घा बनेगी, वह शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के गौरवमय महामानवीय ऐतिहासिक व्यक्तित्त्व को काल्पनिक पौराणिक कीचड़ से बाहर निकाल कर अपने उज्ज्वल सत्य स्वरूप में उजागर करेगी। इससे विश्व में भारत का सिर पुन: ऊंचा होगा। यह दीर्घा अत्याधुनिक श्रवण, दृश्य तकनीक द्वारा अत्यंत आकर्षक ढंग से तथागत के जीवन की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं के साथ-साथ विपश्यना विद्या के पुरातन प्रयोग की सच्चाई को उजागर करेगी। इससे बुद्ध और उनकी सही शिक्षा के बारे में देश में फैला हुआ अज्ञानभरा अंधकार दूर होगा और बहुसंख्यक लोग उनकी सिखाई हुई सांप्रदायिकताशून्य, वैज्ञानिक और आशुफलदायिनी विपश्यना को अपना कर अपना कल्याण साध लेंगे। इस विशाल आकर्षक स्तूप को देखने के लिए बाहर से आए हुए अनेक लोग भी विपश्यना साधना से अवगत होंगे और उनमें से अनेक इस देश में अथवा अपने-अपने देश में लौट कर विपश्यना साधना के शिविर में भाग लेकर अपना कल्याण साध लेंगे। इस प्रकार विपश्यना विश्वव्यापी होकर विश्व कल्याण करेगी।

यही तो परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन की पुनीत धर्म कामना थी। आओ, उपरोक्त सभी योजनाओं को पूरा करके उनकी इस मंगलकामना को पूरा करते हुए हम अपना भी कल्याण साध लें तथा जन-जन के कल्याण में भी सहयोगी बन जायँ।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

***विपश्यना**, बुद्धवर्ष 2542, फाल्गुन पूर्णिमा, 2 मार्च 1999, वर्ष 28, अंक 9 से साभार*

मंगल मृत्यु

पूज्य गुरुजी के तीसरे पुत्र श्री मुरारीलाल गोयन्का ने 7 फरवरी 2023 को उनके निवास पर शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। उन्होंने पूज्य सयाजी ऊ बा खिन से साधना सीखी और मध्य-पूर्व भारत के रांची में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करते हुए साधना करते रहे। वे परिवार के पहले व्यक्ति थे जो गुरुजी के साथ बोधगया के प्रमुख बुद्ध मंदिर में साधना किये। हिमाचल प्रदेश की विख्यात चोटी चैल के ऐतिहासिक राजभवन (पैलेस होटल) में लगे शिविर में शामिल हुए जिसमें भारत तथा विश्व के अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति शामिल थे। एक दिन दोपहर के भोजन के समय गुरुजी ने मुरारी से कहा कि "यह शिविर हाथियों से हल चलाने जैसा है"।

श्री मुरारी के सहयोग से गुरुजी को विदेश जाने का पासपोर्ट और फ्रांस, इंगलैंड एवं कनाडा की वीसा समय पर मिल सकी। उन्होंने कई पूर्ण अथवा अल्पावधि के शिविरों में भाग लिया और ट्रस्टी आदि के रूप में सेवा दी थी। अपने पुण्यबलों के फलस्वरूप उन्होंने शांतिपूर्वक शरीर छोड़ा। धर्मपथ पर उनकी उत्तरोत्तर प्रगति हो और वे निर्वाणलाभी हों, धम्म परिवार की यही मंगल कामना है।

ऑनलाइन पालि-हिंदी सर्टिफिकेट कोर्स-2023

प्रवेश-प्रक्रिया 1 से 31 मार्च 2023 तक चलेगी। कोर्स-डिटेल्स और आवेदन पत्र:- विभिन्न व्हाट्सएप समूहों एवं लिंक पर-(नीचे दिए गए), 1 मार्च 2023 से, उपलब्ध होगा। https://palilearning.vridhamma.org/

कृपया अपनी पूछताछ व्हाट्स ऐप नंबर +91 78219 95737 पर संदेश भेजें।

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

केंद्र आचार्य के रूप में सेवा

1) धम्म अम्बिका, नवसारी के लिए
श्री केशवलाल पटेल (KP4)
2) धम्म नर्मदा, भरूच के लिए
श्री जीतूभाई शाह (JS11)
3) धम्म सोनगढ, सोनगढ के लिए
श्री नरेंद्र भरवाडा (NMB)

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री मधुकर लामसे, अमरावती
2. श्री प्रह्लाद गजबे, नागपुर
3. श्री मधुकर क्षीरसागर, वरोरा
4. श्रीमती सुनीता शेंडे, नागपुर

नव नियुक्तियां
सहायक आचार्य

1. श्री ज्ञानदेव बोराटे, पुणे
2. श्री आनंद आर. पवार, मुंबई
3-4. श्री स्वप्निल एवं श्रीमती पारुल देशपांडे, इगतपुरी
5. श्रीमती सरला पामिडी, इगतपुरी
6. श्रीमती रचना मेश्राम, यवतमाल
7-8. श्री राजेंद्र कुमार शर्मा एवं श्रीमती शीला शर्मा, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
9. Ms. Tan Tay Hoy, Malaysia

बालशिविर शिक्षक

1. श्रीमती योगिता वाडेर, सांगली
2. श्री वीरेंद्र वाडेर, सांगली
3. श्री प्रशांत हाटकर, तलेरे
4. श्री शिवकुमार शिवलिंगम, चेन्नई
5. श्रीमती सुषमा विश्वास खाड़े, कोल्हापुर
6. श्रीमती साधना संतोष तोल्ले, पनवेल
7. श्री राजशेखरन सोरुबन, बेंगलुरु
8. श्री निकेश कसारे, पनवेल
9. श्रीमती माधुरी सुहास भोसले, कोल्हापुर
10. श्री विश्वास महादेव खाड़े, कोल्हापुर
11. डॉ. सुनील अंकुशराव नखाते पनवेल
12. श्रीमती विश्लेषा निकेश कसारे, पनवेल

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का के जन्म शताब्दी समारोह के दौरान
विश्व विपश्यना पगोडा के महा शिविर कार्यक्रमों की सूची

माह	प्रस्तावित महा शिविर तिथियां	अवसर
मार्च 2023	19 मार्च 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
मई 2023	7 मई 2023, रविवार	बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में
जून 2023	11 जून 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
जुलाई 2023	2 जुलाई 2023, रविवार	गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में
अगस्त 2023	27 अगस्त 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
सितम्बर 2023	10 सितम्बर 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
अक्टूबर 2023	1 अक्टूबर 2023, रविवार	शरद पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
नवंबर 2023	19 नवंबर 2023 रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
दिसम्बर 2023	10 दिसम्बर 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
जनवरी 2024	14 जनवरी 2024, रविवार	संघ दान और महा शिविर
फरवरी 2024	**समापन समारोह :** 4 फरवरी 2024, रविवार	**'डॉक्यूमेंट्री फिल्म' का विमोचन और अन्य कार्यक्रम**

Registration link:- **oneday.globalpagoda.org**

For any other information- Tel :- 022-50427500 / +91 8291894644 • **Email: guruji.centenary@globalpagoda.org**

N.B. The QR code on top right corner contains informations regarding Centenary Program.

दोहे धर्म के

जय जय जय गुरुदेवजू, जय जय कृपानिधान।
धरम रतन ऐसा दिया, हुआ परम कल्याण॥

ऐसा चखाया धरमरस, विषयन रस न लुभाय।
धरम सार ऐसा दिया, छिलके दिये छुड़ाय॥

धरम दिया कैसा सबल! पग पग करे सहाय।
भय-भैरव सारे मिटे, निर्भय दिया बनाय॥

यदि गुरुवर मिलते नहीं, बरमा देश सुदेश।
तो मिथ्या जंजाल में, जीवन होता शेष॥

दूहा धरम रा

गुरुवर! तेरी ही क्रिपा, कटै करम रा क्लेस।
फिर से आयी धरम री, गंगा भारत देस॥

करजो भारतवरस रो, बरमा रयो चुकाय।
किरपा सिरि गुरुदेव री, बन्दो नाम कमाय॥

पारस परसे लोह नै, सुवरण देय बणाय।
गुरुवर परस्यो लोह नै, पारस दियो बणाय॥

गुरुवर तेरा प्रतिनिधि देउं धरम रो दान।
जन जन रो होवे भलो, जन जन रो कल्याण॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

“विपश्यना विशोधन विन्यास” के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2566, फाल्गुन पूर्णिमा, 07 मार्च, 2023

वार्षिक शुल्क रु. 100/-, US $ 50 (भारत के बाहर भेजने के लिए) “विपश्यना” रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2021-2023

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.) **(फुटकर बिक्री नहीं होती)**
DATE OF PRINTING: 21 FEBRUARY, 2023, DATE OF PUBLICATION: 07 MARCH, 2023

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086,
244144, 244440.
Email: vri_admin@vridhamma.org;
Course Booking: info.giri@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

100 Years
S.N.GOENKA
1924 - 2024

Sukhā saṅghassa sāmaggī,
samaggānaṃ tapo sukho
Happy is the unity of the Saṅgha &
Happy are those who meditate together

Centenary Celebrations of Birth Year of Pujya Guruji S.N. Goenka
Schedule of Mega Courses at GLOBAL VIPASSANA PAGODA, Gorai, Mumbai

Month	Proposed Mega Course, Date & Day	Occasion
March 2023	19th Mar 2023, Sunday	Centenary year Mega course
May 2023	7th May 2023, Sunday	Buddha Purnima
June 2023	11th Jun 2023, Sunday	Centenary year Mega course
July 2023	2nd Jul 2023, Sunday	Guru Purnima
August 2023	27th Aug 2023, Sunday	Centenary year Mega course
September 2023	10th Sept 2023, Sunday	Centenary year Mega course
October 2023	1st Oct 2023, Sunday	Sharad Purnima (Pujya Guruji)
November 2023	19th Nov 2023 Sunday	Centenary year Mega course
December 2023	10th Dec 2023, Sunday	Centenary year Mega course
January 2024	14th Jan 2024, Sunday	Sangha dana and Mega Course
February 2024	MEGA EVENT 4th Feb 2024, Sunday	**Documentary Film on Pujya Guruji & other events**

पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयन्का के जन्म शताब्दी समारोह के दौरान
विश्व विपश्यना पगोडा के महा शिविर कार्यक्रमों की सूची

माह	प्रस्तावित महा शिविर तिथियां	अवसर
मार्च 2023	19 मार्च 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
मई 2023	7 मई 2023, रविवार	बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में
जून 2023	11 जून 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
जुलाई 2023	2 जुलाई 2023, रविवार	गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में
अगस्त 2023	27 अगस्त 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
सितम्बर 2023	10 सितम्बर 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
अक्टूबर 2023	1 अक्टूबर 2023, रविवार	शरद पूर्णिमा एवं पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में
नवंबर 2023	19 नवंबर 2023 रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
दिसम्बर 2023	10 दिसम्बर 2023, रविवार	शताब्दी वर्ष महा शिविर
जनवरी 2024	14 जनवरी 2024, रविवार	संघ दान और महा शिविर
फरवरी 2024	**समापन समारोह :** 4 फरवरी 2024, रविवार	**'डॉक्यूमेंट्री फिल्म' का विमोचन और अन्य कार्यक्रम**

Registration link:- **oneday.globalpagoda.org**
For any other information- Tel :- 022-50427500 / +91 8291894644
• Email: guruji.centenary@globalpagoda.org

N.B. The QR code on top right corner contains informations regarding Centenary Program.

सच्ची श्रद्धांजलि

इस शताब्दी समारोह के दौरान सभी लोग अधिक से अधिक साधना एवं सामूहिक साधना करते हुए धर्म को जीवन/आचरण में उतारने का संकल्प लें तो ही पूज्य गुरुजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। तभी उनके प्रवचनों एवं अन्य निर्देशों के प्रति सही सम्मान होगा।